ता हद-ए-नजर एक बयाबान सा क्यों है?

– अनुराग बेहार

कोरोना की यह महामारी मानव इतिहास में कितना गहरा और गंभीर परिवर्तन लाने वाली है, हम नहीं जानते मगर हम इससे निश्चित ही बदल जाएंगे।

'बस बॉयज एण्ड पोएट' वाशिंगटन डीसी का एक प्रसिद्ध अमेरिकन (ब्लेक) कवि और एक्टिविस्ट लैंगस्टन ह्यूजेस, जिन्होंने अपनी आजीविका की शुरुआत एक बस बॉय (बैरे के सहायक के रूप में की थी) को श्रद्धांजलि देने के उद्देश्य से रखा गया था। 22 फरवरी 2020 की दोपहरी में मैं अकेले ही यहां खाना खा रहा था और एक पुस्तक पढ़ रहा था। मेरे सामने की टेबल पर बैठे लोग मेरी पुस्तक को एकटक देखे जा रहे थे। जाते समय वे मेरे पास रुके और बोले, हमें नहीं लगता कि यह मामला इतना गंभीर है। आप यह पुस्तक क्यों पढ़ रहे हैं? वे उत्सुकतावश थोड़े से आक्रामक भी नजर आ रहे थे।

इस पुस्तक का शीर्षक था 'प्लेग एंड पीपुल' जो कि विलियम एम.सी. नील ने लिखी थी। यह किसी महामारी के मानवता पर पड़ने वाले प्रभाव की पड़ताल करने वाली संभवतः पहली पुस्तक थी, जिसमें आदिमानव से लेकर निओलिथिक युग और उसके बाद सभ्यता के उदय से लेकर आधुनिक युग तक की बात की गई है। मैं अपनी लय को तोड़ना नहीं चाहता था। अतः मैने कहा, माफ करें, मैं इसे नहीं पढूंगा और यह कहकर मैंने पुस्तक बंद कर दी। वे वहां से चले गए। उसी शाम को जब मैं डलेस हवाई अड्डे से बैंगलोर के लिए प्रस्थान कर रहा था तो वह पुस्तक सुरक्षा जांच के समय मेरे लैपटॉप के साथ बाहर निकल आई। दूसरी तरफ खड़ा सुरक्षा जांच आधिकारी पुस्तक को देखकर बोला, एकदम सही पुस्तकें पढ़ रहे हो सर, ऐसा ही होने वाला है।

3 मार्च को मैं उत्तराखण्ड राज्य के ऊधमसिंह नगर जिले में सितारगंज के पास स्थित गांव मालपुरा के एक स्कूल में था। वहां 3 शालाओं के बच्चे एक बाल मेले के आयोजन में हिस्सा लेने आए हुए थे। उन्होंने वहां स्वयं बनाई हुई वस्तुओं का प्रदर्शन किया था। यह बहुत बड़ा मैदान नहीं था, वहां 200 लोग जमा थे। मैदान के दूर कोने में जहां बच्चों का एक झुण्ड जमा था, मुझे मंत्र पढ़ने जैसी कोई

फोटोः पुरूषोत्तम ठाकुर

आवाज सुनाई दी! जब मैं उनके पास गया तो उनके द्वारा बोले जा रहे शब्द और स्पष्ट हो गए। वे जाप कर रहे थे– कोरोना वायरस, कोरोना वायरस....वे इस तरह से कोरोना वायरस का नाम लेते जा रहे थे और गोल–गोल घूमते जा रहे थे। मैंने पूछा, ये जाप क्यों कर रहे हो? कोरोना वायरस कौन है?

- भयंकर बीमारी है, उन्होंने उत्तर दिया।
- तो फिर अब आप क्या करोगे? मैंने पूछा।

हमें अपने हाथ धोने चाहिए, उन्होंने उत्तर दिया और हंस पड़े। उस सप्ताह में मैंने उस जिले के पूर्वी क्षेत्र से लेकर पश्चिमी क्षेत्र तक कई स्कूलों का भ्रमण किया, जैसे कि मैं सालों से और हर साल करता आया हूं। हरेक स्कूल में मैंने पाया कि कोरोना वायरस का नाम प्रचलित हो गया है मगर उससे डर व्याप्त नहीं है।

8 मार्च को मैं बंगलौर वापस आया। दो दिनों में हमने अपने विश्वविद्यालय को बंद करने का निर्णय लिया और यह निर्णय हम शहर की सारी शैक्षणिक संस्थाओं को बंद करने के सरकारी आदेश आने के दो दिन पहले ले पाने में समर्थ हुए। इन अतिरिक्त दो दिनों के मिलने से हम यह प्रक्रिया बेहतर तरीके से कर पाए। अगले ही दिन से

हमने संस्था के सदस्यों के सभी गैर जरूरी प्रयास बंद कर दिए। उसके बाद कोरोना वायरस के बारे में आती नई सूचनाओं के मुताबिक हमारी प्रतिक्रियाओं और उपायों में भी तेजी आती गई। बंगलौर की टीम के साथ–साथ हमारी टीम के करीब 1500 सदस्य भारत के 200 शहरों और कस्बों में काम करते हैं अतः यह सब लागू करने में भी हमें पर्याप्त दिक्कतों और जटिलताओं से जूझना पड़ा। इसके साथ–साथ देश भर में 350 अन्य संस्थाएं भी हमारी सहयोगी संस्थाओं के रूप में काम कर रही है।

मेरी बेटी लन्दन में थी और वह उतनी ही शांत थी जितनी वह आमतौर पर रहती है। मेरे माता–पिता रायपुर में थे और अपने गृहनगर भोपाल वापस आना चाहते थे। इस आयु में इस समय सार्वजनिक परिवहन साधनों से यात्रा करना कतई ठीक नहीं था। इसी समय भारत ने 18 मार्च की दोपहर में हवाई सेवा पर रोक लगा दी और सीमाओं को सीलबंद कर दिया गया और उसके बाद यह भयावहता हर दिन बढ़ती जा रही है।

हम सभी इसी स्थिति में हैं। हम जिनसे सबसे अधिक प्यार करते हैं, उनसे दूर हैं, उनकी मदद कर पाने का कोई विकल्प हमारे पास नहीं है। हम में कई तो बहुत ही बुरी स्थिति में हैं वे जिनकी आजीविका खत्म हो जाने का खतरा है या जिन्हें पहले से ही स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं हैं जिससे खतरा दोगुना हो गया है या फिर जिनके मन में दोनों ही डर है। हमने आधुनिक वैश्विक समाज होने के नाते एकल या सामूहिक रूप से आज से पहले इस तरह की परिस्थिति का सामना कभी भी नहीं किया। हम इस आपदा के बीच के हिस्से में नहीं वरन एकदम शुरुआती हिस्से में है।

इस परिस्थिति में अब तक संस्थागत प्रतिक्रियाओं के रूप में हमने कुछ सामान्य सिद्धान्तों को अपनाया है। पहला, सुरक्षा सबसे महत्वपूर्ण है। सुरक्षा केवल हमारी या हमारे परिवार की ही नहीं वरन् हमारे समुदाय की सुरक्षा महत्वपूर्ण है। हमें किसी भी दूरस्थ क्षेत्र में इस वायरस का ग्रास नहीं बनना है। दूसरा, यहां–वहां फैलती भ्रामक खबरों और सूचनाओं को दरकिनार करते हुए सभी सरकारी निर्देशों और विशेषज्ञों की सलाह पर ही ध्यान देना। तीसरा, हमें सामान्य से अधिक बार आपस में संपर्क बनाए रखना है, संवाद करना है। हर दिन हम अपने सैकड़ों साथियों के साथ दो टेली कॉन्फ्रेस करते हैं जो कि इसके बाद अपनी टीम के सदस्यों से बात करते हैं। हम अपनी सहयोगियों से भी रोज बात करते हैं। चौथी, बात यह कि काम निरंतर चलते रहना चाहिए। यह मुद्दा बड़ा जटिल है और हम इस पर पकड़ बनाए रखने की कोशिश में है। काम महत्वपूर्ण तो है ही, साथ ही यह इस मुश्किल के साथ सामंजस्य बिठाने में भी हमारी मदद करता है। पांचवी, बात यह कि हमें दूसरों की मदद करने के तरीके भी खोज निकालने हैं और इस तरह से इस संकट से पार पाना है। हमें चूंकि संसाधनों और व्यक्तिगत संपदा तथा विस्तार की विशेष सुविधा प्राप्त है, हमें उन क्षेत्रों में जाना चाहिए जहां सबसे ज्यादा मदद की आवश्यकता है। छठा और सबसे महत्वपूर्ण यह कि हमें समानुभूति के साथ करना होगा। हम सभी एक जैसे भय और भ्रम की स्थिति में जी रहे हैं। हमें ऐसी स्थिति में एक–दूसरे के साथ खड़ा रहना होगा।

मैंने 'प्लेग और पीपुल पुस्तक' पिछले वर्ष, वुहान से कोरोना का पहला समाचार आने से पहले, दिसम्बर में खरीदी थी। इसे भारी संयोग ही कहा जाएगा। इस पुस्तक के पहले अनुच्छेद के मुताबिक प्रतिभा, ज्ञान और संस्थाएं अपने आप में बदलाव लाती हैं, प्रगति करती हैं मगर इस बदलाव से मानव प्रजाति के बाहरी परजीवी जीवों के चंगुल में आने की भेदता को रोका नहीं जा सकता। मानव जाति के इतिहास के प्रमुख मानकों और निर्धारकों के मुताबिक ऐसी संक्रामक बीमारियां मानव प्रजाति के उद्भव के पहले से ही मौजूद है, वे तब तक रहेंगी जब तक कि मानव का अस्तित्व मौजूद हैं चूंकि अब तक के मानव जाति के इतिहास में ऐसा ही देखा जाता रहा है।

कोरोना की यह महामारी मानव इतिहास में कितना गहरा और गंभीर परिवर्तन लाने वाली है, हम नहीं जानते मगर हम इससे निश्चित ही बदल जाएंगे। इसके उत्तर में हमारी प्रतिक्रिया ही यह बतायेगी कि हम कौन हैं और इस जीवन काल में हम क्या होने वाले हैं। हां, ऐसे भी समय होते हैं जिसमें एक छोटी सी अवधि हमारे भीतर गंभीर बदलाव ला सकती है। संभवतः यह समय भी ऐसा ही समय है। अपने विचार, साहस और समानुभूति के बल पर हमें तय करना है कि हम कौन होना चाहते हैं।

(लेखक अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के सीईओ तथा अज़ीम प्रेमजी विश्व विद्यालय के वाइस चांसलर है। उनका यह आलेख अंग्रेजी अखबार मिंट से अनूदित है।